ज्ञानविविधा
रचना, आलोचना और शोध की त्रैमासिक पत्रिका

Online ISSN : 3048-4537
April-June, 2024 : 1(3) 07-12
©2024 Gyanvividha
www.gyanvividha.com

देशमुख निलेश शिवाजी
शोधार्थी, हिन्दी विभाग,
काशी हिन्दू विश्वविद्यालय वाराणसी

Corresponding Author :
देशमुख निलेश शिवाजी
शोधार्थी, हिन्दी विभाग,
काशी हिन्दू विश्वविद्यालय वाराणसी

आदिवासी साहित्य का सौन्दर्यशास्त्र

हिन्दी साहित्य में दलित व स्त्री विमर्श के बाद आदिवासी विमर्श पर सबसे अधिक संगोष्ठियाँ व परिचर्चाएँ होने लगी है। कुछ वर्ष पूर्व तक आदिवासियों के नाम, उनकी संस्कृति, कभी सभ्यता, तो कभी उनके अस्तित्व और अस्मिता का सवाल उपस्थित होता था। लेकिन आज सबसे बड़ा प्रश्न 'आदिवासी दर्शन' और 'आदिवासी सौंदर्यबोध' के अध्ययन का है। आदिवासी साहित्य का सौन्दर्यशास्त्र आदिवासी के जीवनबोध और मूल्यबोध से बनता है। उनके जीवन शैली में बड़ी मात्रा में विविधताएँ देखने को मिलती है। इन विविधताओं में उनका सौन्दर्य अंतर्निहित होता है। आदिवासी सामूहिक जीवन के परिपेक्ष्य में देखे, तो उनके छोटे से छोटे पहलुओं को भी इसमें समाहित किया जाता है। आदिवासी जीवन दृष्टि का विकास उनके रोजमर्रा के कार्यों एवं वाचिक गीत-संगीत-नृत्य से भी परिलक्षित होता है। इनके गीत-संगीत-नृत्य में विकास की एक लंबी परंपरा देखने को मिलती है। लेकिन इन सबके बावजूद आदिवासी सौन्दर्यशास्त्र अभी भी गर्भस्थ अवस्था में ही है। इसलिए आदिवासी विद्वानों का इस तरफ लक्ष्य केंद्रित करना होगा। आदिवासी साहित्य मानवीय मूल्य व परम्पराओं के रूप में वर्तमान में व्यापक व चर्चित विषय बना हुआ है। हिन्दी साहित्य में जिस प्रकार से अनेक विषयों की वैविधता और व्यापकता का स्तर आधुनिक काल में परिलक्षित होता है। उसी प्रकार अस्मितामूलक विमर्श में मुख्यतः आदिवासी साहित्य में आदिवासी समाज के जीवन, कला, गीत-संगीत और साहित्य के विभिन्न स्तर देखने को मिलते हैं। इन विविध स्तरों का सामंजस्य उनके संस्कृति और साहित्य में एक साथ परिलक्षित होता है। संस्कृति, प्रकृति व जीवन के लगभग सभी घटक उनके सौन्दर्य में प्रतीक, बिम्ब और मिथकों के रूप में उपस्थित होते हैं।

आदिवासी साहित्य के सौन्दर्यशास्त्र पर एक दशक पूर्व किसी भी संगोष्ठी में बहुत अल्प रूप में सुनने व पढ़ने को मिलता था। लेकिन आज स्थिति बदल गई है। विविध विश्वविद्यालयों में आदिवासी साहित्य के सौन्दर्यशास्त्र पर बातचीत हो रही है। सौन्दर्यशास्त्र का अपना स्वतंत्र दर्शन, सिद्धांत व वाद है। सौंदर्यशास्त्र यूरोपीय देशों से

आया हुआ सिद्धांत है। 1718-1720 के पूर्व किसी रूप में सौंदर्यशास्त्र पर कई कोई चर्चाएं नहीं हुई है। इसलिए किसी भी साहित्य के बारे में कोई विशिष्ट दृष्टिकोण बनाने से पहले हमें उसके दर्शन व सौन्दर्यशास्त्र के कुछ पैमानों के आधार पर भी देखना होगा, तब सही अर्थ में उस समाज का सही मूल्यांकन हो पायेगा। आदिवासी साहित्य के सौंदर्यशास्त्र पर चर्चा करने से पहले आदिवासी शब्द की परिभाषा को सही अर्थों मे हमें समझना चाहिए। सबसे पहले हम देखते हैं कि आदिवासी कौन है और आदिवासी किसे कहा जाता है, यह एक सवाल हमेशा भ्रमित करता रहा है। विशेष कर उस समय जब कोई गैरआदिवासी बिना जाने-समझे और न किसी आदिवासी की पुस्तक को पढ़े बैगर और न किसी आदिवासी बस्ती में जाते हुए ही अपनी सीमित मानसिकता करके लिखता एवं बताता है, उस समय सबसे अधिक भ्रम पैदा होता है। क्योंकि वह पहले से चली आ रही धारणाओं के आधार पर ही लिखता है। इसलिए सबसे पहले 'आदिवासी' व 'आदिवासी साहित्य' की परिभाषा को जानना जरूरी है।

आदिवासी साहित्य को परिभाषित करते हुए प्रसिद्ध मराठी आदिवासी साहित्यकार डॉ.विनायक तुमराम कहते हैं- "आदिवासी साहित्य वन संस्कृति से सम्बन्धित साहित्य है। आदिवासी साहित्य वन जंगलों में रहने वाले उन वंचितों का साहित्य है, जिनके प्रश्नों का अतीत में कभी उत्तर ही नहीं दिया गया। यह ऐसे दुर्लक्षितों का साहित्य है, जिनके आक्रोश पर मुख्यधारा की समाज व्यवस्था ने कान ही नहीं धरे। यह गिरी-कन्दराओं में रहने वाले अन्याय ग्रस्तों का क्रांति साहित्य है। सदियों से जारी क्रूर और कठोर न्याय-व्यवस्था ने जिनकी सैकड़ों पीढ़ियों को आजीवन वनवास दिया, उस आदिम समूह का मुक्ति-साहित्य है आदिवासी साहित्य। वनवासियों का क्षत जीवन, जिस संस्कृति की गोद में छुपा रहा, उसी संस्कृति के प्राचीन इतिहास की खोज है यह साहित्य। आदिवासी साहित्य इस भूमि से प्रसूत आदिम-वेदना तथा अनुभव का शब्दरूप है।"[1]

प्रसिद्ध आदिवासी एक्टिविस्ट व कवयित्री रमणिका गुप्ता कहती है- "मैं आदिवासी साहित्य उसी को मानती हूँ जो आदिवासियों ने लिखा और भोगा है। उसे आदिवासी समस्याओं, सांस्कृतिक, राजनीतिक व आर्थिक स्थितियों तथा उनकी जीवन-शैली पर आधारित होना होगा। अर्थात् आदिवासियों द्वारा आदिवासियों के लिए आदिवासियों पर लिखा गया साहित्य आदिवासी साहित्य कहलाता है।"[2]

वर्तमान संदर्भ में "आदिवासी शब्द का प्रयोग विशिष्ट पर्यावरण में निवास करने वाले, धार्मिक परम्पराओं को मानने और उन पर प्रगाढ़ आस्था रखने वाले, सदियों से जंगलों, कन्दराओं और पहाड़ों में रूप में परिलक्षित किया जाता है।"[3] आदिवासी वह है, जो अपनी पुरातन सभ्यता एवं परम्परा का विकास करते हुए, मूल रूप से इस देश का मालिक है। लेकिन आज उसे ही किनारे कर गैर आदिवासी इस देश के मालिक बन बैठे है। उसी रूप में आदिवासी के साहित्य को दरकिनार कर मुख्यधारा ने अपना वर्चस्व निर्मित किया है। और आज उन्हें सहानुभूति के नजरों से देख रहे हैं।

आदिवासी साहित्य पर विभिन्न दृष्टिकोणों से विचार होता रहा है। लेकिन उनके अस्तित्व और अस्मिता का सवाल आज भी है, और बीच-बीच में उनके विस्थापन का सवाल भी उपस्थित होता है। आदिवासी समाज में जीवन पद्धति एवं विचार बोध के साथ-साथ सौन्दर्यबोध पहले से ही परिपक्व स्थिति में उपलब्ध नहीं है, लेकिन आज उनके वाचिक परम्परा एवं साहित्य से हमें समझना चाहिए कि उन्हें किसी प्रकार सिखाने की जरूरत नहीं है, बल्कि आज उनसे सीखने की जरूरत है। आदिवासी साहित्य पर बहुत सारे विद्वान बने बनाए ढांचे के आधार पर अपने चश्मे से आदिवासियों को आँकने की कोशिश करते हैं। लेकिन आज आदिवासी की कलम से ही आदिवासियों के साहित्य को समझने की जरूरत है। आदिवासी समाज का अपना एक दृष्टिकोण होता है, अपनी संस्कृति होती है, अपनी परम्परा है, अपना दर्शन है, जिससे वह इस चकाचौंध भरी दुनिया से दूर अपनी संस्कृति और प्रकृति का संरक्षण व संवर्धन करते हुए अपना जीवन बिताता है। लेकिन आज जहाँ वे रहते हैं वहाँ के पहाड़ तोड़े जा रहे हैं, पृथ्वी के गर्भ से सारी सम्पदा निकाली जा रही है, उनकी जमीन कॉर्पोरेट के निशाने पर है। ऐसे में वह खुद का संरक्षण भी बड़े ही जद्दोजहद से कर पर रहा है। आदिवासी समाज में सौन्दर्य का दूसरा नाम संघर्ष है। इसलिए साहित्य के सृजन व संघर्ष से ही आदिवासी साहित्य का सौंदर्यशास्त्र का निर्माण होता है।

सौन्दर्यशास्त्र व शास्त्र है जिसमें कलात्मक कृतियों रचनाओं आदि से अभिव्यक्त होने वाला अथवा उनमें निहित रहनेवाले सौन्दर्य का तात्विक और मार्मिक विवेचन होता है। यह सौन्दर्यपरक मूल्यों पर विमर्श है, जो विशेषतः रस की प्रसमीक्षा से अभिव्यंजित होता है। आदिवासी जीवन की अपनी भावभूमि है, सौन्दर्यबोध है, विश्वदृष्टि है। साहित्य में मानवीय मूल्यों एवं सहअस्तित्व में अटूट विश्वास ही उसकी विशेषता है। आदिवासी दर्शन में प्रकृति और पुरखों के प्रति आभार का भाव निहित होता है। यह साहित्य समूचे जीव-जगत को समान महत्व देकर मनुष्य की श्रेष्टता के दंभ को खारिज करता है। सौन्दर्यशास्त्र आदिवासी को और उनके साहित्य को देखने की एक नयी दृष्टि प्रदान करता है।

किसी भी व्यक्ति के अंदर सौन्दर्यबोध का होना जरूरी है बिना सौन्दर्यबोध के उनका जीवन अधूरा है। जब कोई व्यक्ति अपनी दृष्टि से देखता है मगर मन स्वच्छ होगा तो चरित्र भी अच्छा होगा और जब चरित्र अच्छा होगा, तभी हम एक अच्छे समाज की कल्पना कर सकते हैं। इसी दृष्टिकोण से आदिवासी अपने आस-पास के प्रकृति, संस्कृति को सुन्दर से सुन्दर दृष्टि से देखता है। इन सहजता, आत्मीयता और सामाजिकता से वह सबको स्वीकारता है और एक जैसे ही समझता है। इसलिए उनका सौन्दर्यबोध अपने आप में विशिष्ट व अनुकरणीय है। आदिवासी सौन्दर्यबोध को समझने व जानने के लिए मुख्यतः उनके वाचिक साहित्य को समझना पड़ेगा, इसके लिए उनकी बस्ती में जाना पड़ेगा, और देखना पड़ेगा किस तरह उनकी विचारधारा है, किस तरह से किसी को भी रंग, वर्ण, गरीबी की दृष्टि से नहीं देखता सबको समानता से सौन्दर्यवादी दृष्टि से देखने का पक्षपाती है। उनके यहाँ सब कुछ सुंदर है। आज हमें किसी भी व्यक्ति या समाज में श्रेष्टता का भावबोध त्यागकर घृणा से वैराग्य स्थापित कर इन आदिवासी गीतों के उपमानों को जगह देने की आवश्यकता है। इन भिन्नताओं को लेकर भिड़ने के बजाएं हमें इसे स्वीकार करना चाहिए। यही किसी भी साहित्य का महत् उद्देश्य भी होता है। जब तक इस तरह से आदिवासी की दृष्टि एवं विचारधारा को नहीं जानेंगे, तब तक उस व्यक्ति का ज्ञान अधूरा ही समझा जाएगा।

संसार मे हर एक रीति-रिवाज और सांस्कृतिक प्रदर्शन मौखिक परंपरा और लोक-रूपों का ऋणी है, जिन्हें हम कला के अर्थ और धर्म के नाम पर अलग-अलग करके देखते हैं, वे सभी उसी जीवन-व्यापार में सामहित है। "व्यक्ति का स्वभाव, सौन्दर्यबोध और उसका विश्व दृष्टिकोण को बचपन में आकार ग्रहण करते हैं और बाद में जीवन में दृढ़ होते जाते हैं को ये ही शाब्दिक और शब्दातीत परम्पराएं गढ़ती है। व्यापक निरक्षर संस्कृति में हर कोई चाहे वह गरीब हो या अमीर, सवर्ण हो या शूद्र, प्रोफेसर हो या पंडित अथवा अज्ञानी, इंजीनियर हो या फेरीवाला- अपने भीतर एक बड़ा निरक्षर उपमहाद्वीप लिए होता है।"[4] वर्तमान समय में हमें प्रकृति के अनुपम सौन्दर्य को निखारने के लिए आदिवासी परंपरा को बरकरार रखने की जरूरत है। आदिवासी परंपराओं को जब तक हम संभालेंगे नहीं तब-तब प्रकृति के साथ-साथ हम सभी नष्ट होते रहेंगे। आज जिस तरह से प्रकृति का दोहन सभी जगह कमोबेश एक जैसे हो रहा है। ऐसे में किसी से किसी भी प्रकार की उम्मीद करना बेकार है। हर कोई अपने लाभ के लिए कार्य कर रहा है। वह कभी भी समाज का विचार नहीं करता, लेकिन आदिवासी समाज अपने साथ-साथ आने वाली नस्ल व सभी व्यक्तियों के साथ सभी जानवरों को शुद्ध हवा मिले, जल मिले, सभी किट-पतंग, पशु-पक्षी बड़े झरने बहते रहें, इसके लिए प्रकृति का संरक्षण व संवर्धन करते हैं। यही उनके साहित्य का मूल उद्देश्य है। आदिवासी साहित्य 'स्व' के परे 'सामूहिकता' को महत्त्व देता है।

"जिस प्रकार से दलित साहित्य का सौन्दर्यशास्त्र सवर्ण वर्चस्व या मुख्यधारा के सौन्दर्यशास्त्र से भिन्न है। वैसे ही आदिवासी साहित्य का सौन्दर्यशास्त्र भी सवर्ण वर्चस्व अर्थात मुख्यधारा के सौन्दर्यशास्त्र से भिन्न है। आदिवासी साहित्य का सौन्दर्यशास्त्र प्राकृतिक दर्शन पर आधारित है। इसके केंद्र में उच्च मानवीय मूल्य होते हैं। इस सौन्दर्यशास्त्र में मनुष्यों के साथ पेड़-पौधों और जीव जंतुओं, नदि-नालों और पहाड़ों के लिए भी जगह होती है। आदिवासी सौन्दर्यशास्त्र में अलग से किसी 'वाद' को चलाने की जरूरत नहीं है। यह अपनी मौलिकता और स्वाभाविकता के लिए जाना जाता है और हर प्रकार के बनावटीपन का निषेध करता है। यह सामुदायिकता के दर्शन पर आधारित सौन्दर्यशास्त्र है जिसके केंद्र में प्रेम, भाईचारा, संवेदना और जीवन है।"[5] आदिवासी साहित्य का सौंदर्यशास्त्र सबसे अधिक जहाँ कई दिखाई देता है वह है उनके गीत, कविता जहाँ वे सामूहिकता से गाते हैं।

सौन्दर्यशास्त्र का अर्थ सौन्दर्यशास्त्र भारतीय साहित्य के लिए एक नया शब्द रहा है। इसके पहले भारतीय साहित्य में इस शब्द का प्रयोग नहीं मिलता। इसका निर्माण ऐस्थेटिक्स के पर्याय के रूप में किया गया। ऐस्थेटिक्स वैसे तो यूनानी शब्द है, जिसका अर्थ है ऐंद्रिय संवेदना। पाश्चात्य साहित्य में सबसे प्रथम बाडमगार्टन ने प्रस्तुत संदर्भ में उक्त शब्द का प्रयोग कर इस बात पर बल दिया था कि सौन्दर्य मूलतः एक प्रकार का ऐन्द्रिय संवेदन ही है। परंपरा के अनुसार सौन्दर्यशास्त्र दर्शन की एक शाखा है, जिसका विवेच्य विषय है। कला और प्रकृति का सौन्दर्य। सौन्दर्यशास्त्र के स्वरूप का वर्तमान में अधिक विस्तार हुआ है। वास्तविक अर्थ में सौन्दर्यशास्त्र ऐन्द्रिय संवेदना का विज्ञान है, जिसका लक्ष्य है सौन्दर्य। बिना सौन्दर्य के किसी भी वस्तु को देखने का नजरिया साफ़ नहीं होगा। मनुष्य को किसी भी वस्तुओं को देखने से पहले अपने विचारों को हृदय को उसी दृष्टि से देखना होगा, जिसे वह देख रहा है। उदाहरण के लिए कोई व्यक्ति पौधे को देख रहा है और उसे लगे कि इस पौधे से बाद में छाव, फल-फूल मिलेगा। यह जीवन में उपयोगी है, तो वह उसे अत्यंत सुंदर कहेगा, लेकिन वहीं दूसरा व्यक्ति उस पौधे को देखकर उसके मन में आए कि यह पौधा यहाँ किसी काम का नहीं है। इन दोनों ही दृष्टियों को देखते हैं, तो अंतर समझ में आ जाता है। इनमें प्रथम व्यक्ति की सौन्दर्यवादी दृष्टि साफ़ देखने को मिलती है। यह प्रथम दृष्टि ही आदिवासी समुदाय में कार्य करती है। वे किसी भी वस्तु वह सजीव हो या निर्जीव, किट-पतंग हो या संपूर्ण प्रकृति उसे एक ही दृष्टि से देखता है। उन्हें इनसे किसी प्रकार की परेशानी नहीं होती।

सौन्दर्यशास्त्र की परिभाषा देखते हैं तो मालूम होता है कि वास्तविक रूप में सौन्दर्यशास्त्र है क्या? इनसाइक्लोपीडिया ब्रिटेनिका में कहा गया है की "सौन्दर्यशास्त्र कलाओं और उनसे संबंध (मानव) व्यवहार तथा अनुभूति का सैद्धांतिक अध्ययन है। परम्परा के अनुसार यह दर्शन की एक शाखा है, जिसका प्रयोजन है सौन्दर्य तथा कला और प्रकृति में अभिव्यक्त उसके बहुविध रूपों का अध्ययन।"[6] इस परिभाषा से स्पष्ट होता है कि सौन्दर्यशास्त्र में मनुष्य और कला के संबंध से सृजित अनुभूति का अध्ययन सही अर्थ में सौन्दर्यशास्त्र है।

डॉ.नगेन्द्र के अनुसार- "सौन्दर्यशास्त्र ललित कलाओं के रूप में अभिव्यक्त सौन्दर्य से संबंध मौलिक प्रश्नों के तात्विक विवेचन और उसके परिणामी सिद्धांतों कि संहिता का नाम है।"[7] अर्थात सौन्दर्यशास्त्र में विविध कलाओं तथा सौन्दर्य के सभी मौलिक प्रश्नों व सिद्धांतों का विवेचन होता है।

सौन्दर्यशास्त्र संवेदनात्मक-भावात्मक गुण-धर्म और मूल्यों का अध्ययन है। कला, संस्कृति और प्रकृति का प्रति अंकन ही सौन्दर्यशास्त्र है। सौन्दर्यशास्त्र दर्शनशास्त्र का ही एक अंग है, इसे सौन्दर्य कि मीमांसा तथा आनंद मीमांसा भी कहते हैं। प्रकृति में सर्वत्र सौन्दर्य विद्यमान होता है। सौन्दर्यशास्त्र वह शास्त्र है, जिसमें कलात्मक कृतियों, रचनाओं आदि से अभिव्यक्त होने वाला अथवा उनमें निहित रहने वाले सौन्दर्य का तात्विक, दार्शनिक और मार्मिक विवेचन होता है। किसी सुन्दर वस्तु को देखकर हमारे मन में जो आनंद दायिनी अनुभूति होती है उसके स्वभाव और स्वरूप का विवेचन तथा जीवन की अन्य अनुभूतियों के साथ उसका समन्वय स्थापित करना इनका मुख्य उद्देश्य होता है। सौन्दर्यशास्त्र दर्शन कि एक शाखा है जिसके तहत कला, शिती और सुंदरता से सम्बन्धित प्रश्नों का विवेचन किया जाता है। सौन्दर्यशास्त्र का अर्थ होता है इंद्रिय जनित अनुभूति। हम हमारे इंद्रियों से सौन्दर्य को ग्रहण करते हैं। लेकिन आज उन इंद्रियों पर विभिन्न प्रकार से प्रभाव डाला जा रहा है। उसे आज नियंत्रित व वश में किया जा रहा है। इन्हीं इंद्रियों के सहारे कोई व्यक्ति अपनी दृष्टि से देखता सुनता व पढ़ता है।

आदिवासी सौन्दर्य को समझने के लिए वाचिक गीत, कविता आदि विधाओं के साथ उसे देखने की दृष्टि भी बदलनी चाहिए, जिस प्रकार कविता का सौन्दर्य अलग होता है, वैसे ही उपन्यास का अपना सौन्दर्य है। इसलिए इसे सबसे पहले समझना जरूरी होता है। आज का सौन्दर्य के सौंदर्यबोध भावभूमि, विचारभूमि, मनोभूमि से संबंध है आज उस भावभूमि, विचारभूमि, मनोभूमि पर हमले किए जा रहे हैं। आदिवासी सौंदर्यशास्त्र की केंद्र में सहजीविता होगी, पारस्परिकता होगी, सामुदायिकता होगी, प्रेम होगा और जीवन होगा। तब उसे सौंदर्यवादी दृष्टि से देख सकते हैं। वर्तमान में इस सौंदर्यबोध की रक्षा करनी है इसकी रक्षा कैसे होगी। इसके लिए हमें अपनी साहित्यिक

रचना में चाहे कविता में हो, बिम्ब में हो, प्रतीकों के जरिए हो या किसी के भी जरिए इसकी केवल रक्षा ही नहीं करनी है, इसे संरक्षित ही नहीं करना है, इसे अपनी रचना में उतार करके लोगों तक ले जाना है। और इसके लिए उस आलोचना दृष्टि की बहुत अधिक आवश्यकता है। जो हमें लगता है कि आदिवासी साहित्य के भीतर होनी चाहिए। हम देखते हैं कि कोई भी सौन्दर्य संघर्ष के बिना नहीं और बिना संघर्ष के कोई सृजन नहीं होगा। आदिवासी सौन्दर्य का संबंध संघर्ष से है, जहाँ सृजन है वहाँ संघर्ष है ही। आदिवासी के यहाँ सौन्दर्य, संघर्ष और सृजन का परस्पर संबंध है। प्रकृति-सौन्दर्य के प्रत्यक्ष भावन और चिंतन से कला का जन्म होता है और कला निबद्ध सौन्दर्य के भावन तथा चिंतन से सौन्दर्यशास्त्र का। कला चिंतन का विकास विविध दृष्टि से होता है, जिसमें कभी प्रकृति के सुंदर वातावरण में निकलना पड़ता है, कभी गीत-संगीत-नृत्य से आनंद से लेना पड़ता है। इनका अप्रत्यक्ष संगीत नदी का बहना, पक्षियों का कलरव करना हमें प्रकृति के सान्निध्य मे ही मिलता है।

आदिवासी दर्शन और साहित्य- आदिवासी दर्शन के स्वरूप एवं उसके पहचान के बारे में हम कह सकते हैं कि -प्रकृति के सान्निध्य में रहना, मानवेतर प्राणी जगत के साथ सह-अस्तित्व, अपने आप में खुलापन, सामूहिकता, सहभागिता, आदिवासी संस्कृति, जीवन शैली, उनकी अपनी समस्याएँ, स्वतंत्रता, जल-जंगल-जमीन-जानवर, अपनी मातृभाषा, अपना इतिहास, लोककथाएं, मुहाँवरे, मिथक आदि सब आदिवासी दर्शन के अंतर्गत निहित है। आदिवासी दर्शन में सौन्दर्यबोध होता है। यह सौन्दर्य प्रकृतिगत समता, सहजता, निश्चलता एवं सामूहिकता से बनता है। आदिवासी समाज जिस प्रकार रचनात्मक है उसी प्रकार उनका साहित्य सृजनात्मक भी। आदिवासी समाज में जितना मनुष्य को महत्त्व है, उतना ही महत्त्व पशु-पक्षियों, नदियों, झरने, पहाड़, वनस्पति, किट-पतंग, पेड़-पौधों अर्थात प्रकृति कि प्रत्येक जड़-चेतन की रचना का इसमें संतुलन दिखाई देता है। आदिवासी दर्शन में सौन्दर्य की छटाएँ स्पष्ट दिखाई देती है।

सारांश में कह सकते हैं आदिवासी साहित्य का सौंदर्यशास्त्र गर्भाशय की स्थिति में ही है, लेकिन उसकी निर्मिति वाचिक रूप में आरंभिक समय से ही मौजूद है, जो गीत-संगीत-नृत्य, व कथा-गाथाओं में आज भी परिलक्षित होती है। आदिवासी साहित्य के सौन्दर्यशास्त्र का निर्माण सौन्दर्यबोध, जीवनबोध और मूल्यबोध से होता है। इनमें सौन्दर्य के साथ-साथ सृजन व संघर्ष का अंतरसंबंध भी होता है। आदिवासी सौन्दर्यशास्त्र का संबंध मुख्यतः उनके जीवन शैली से है। इसमें गीत, कविता तो है ही, साथ ही दुनिया को देखने की सौन्दर्यवादी दृष्टि भी विकसित होती है। आदिवासी साहित्य में जीवन मूल्य के साथ आदिवासी दर्शन भी परिलक्षित होता है।

आदिवासी साहित्य में कविता, कहानी, उपन्यास और कुछ मात्रा में नाटक एवं अन्य विधाएं बड़ी मात्रा में लिखी जा रही है। इन सभी विधाओं में सौंदर्यशास्त्र कमोबेश होता ही है, लेकिन अलग-अलग रूपों में। आदिवासी साहित्य में कविता व गीत अधिक प्रचलित है। गीत एवं कविताओं में सौंदर्यशास्त्र बड़े पैमाने पर परिलक्षित होता है। आदिवासी कवि एवं कवयित्रियों की कविताओं में मुख्यतः रामदयाल मुंडा से लेकर निर्मला पुतुल, महादेव टोप्पो, वाहरु सोनवने, अनुज लुगुन, जंसिता केरकेट्टा, पूनम वासम व पार्वती तिर्की के कविता संग्रहों में बखूबी से देखा जा सकता है। आदिवासी के यहाँ सौन्दर्य कोई बाहरी चीज नहीं है, वह आन्तरिक है और संघर्ष से निर्मित होती है। इसलिए आदिवासी साहित्य में सौंदर्यशास्त्र का कोई बना बनाया ढाँचा नहीं है, वह निर्मित किया जाता है। आदिवासी कवियों की कविताओं के सृजन में संघर्ष और सौन्दर्य का सामंजस्य स्पष्ट परिलक्षित होता है। इसलिए कविता के साथ साथ आदिवासी साहित्य में सौंदर्यशास्त्र मिलता है। आदिवासी संस्कृती, जीवन दर्शन व उनके विश्व दृष्टिकोण के प्रति एक नई आत्मीय दृष्टि की मांग करती है। यह सृजनात्मक का साहित्य है जिसमें जड़-चेतन, प्रकृति और सृष्टि सब सुन्दर है।

संदर्भ-

1. गुप्ता रमणिका, आदिवासी साहित्य यात्रा, राधाकृष्ण प्रकाशन दिल्ली, संस्करण 2016, पृष्ठ. सं. 24
2. सं.डॉ.उषाकीर्ति, पाण्डेय डॉ.सतीश, दुबे डॉ.शितलाप्रसाद, आदिवासी केंद्रित हिन्दी साहित्य, अतुल प्रकाशन, कानपुर, प्रथम संस्करण 2012 पृष्ठ. 30
3. राय विभूतिनारायन, शहर में कर्फ्यू (उपन्यास),वाणी प्रकाशन दिल्ली, 2014, पृष्ठ सं. 03
4. लवों नीतिशा, भौतिकतावाद से दूर आदिवासी साहित्य में जीवन सौन्दर्य लेख (जनचौक वेबसाइट इंटरनेट)
5. लुगुन अनुज, आदिवासी साहित्य विमर्श का प्रस्तुति-अंक 384, वागर्थ पत्रिका, मार्च-2019
6. कुन्न हेलमुट, इनसाइक्लोपीडिया ब्रिटेनिका, 1968
7. डॉ.नगेन्द्र, भारतीय सौन्दर्यशास्त्र की भूमिका, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली,1974, पृष्ठ. 04

• • •